08 संज्ञा से अव्यय तक
(From Noun to Indeclinables)

शब्द और पद : जब शब्द स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होता है और वाक्य के बाहर होता है तो यह 'शब्द' होता है, किन्तु जब शब्द वाक्य के अंग के रूप में प्रयुक्त होता है तो इसे 'पद' कहा जाता है। मतलब कि स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने पर शब्द 'शब्द' कहलाता है, किन्तु वाक्य के अंतर्गत प्रयुक्त होने पर शब्द 'पद' कहलाता है।

पद के भेद : पद के पांच भेद होते हैं– संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्यय।

संज्ञा (Noun)

परिभाषा : संज्ञा को 'नाम' भी कहा जाता है। किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव आदि का 'नाम' ही उसकी संज्ञा कही जाती है। दूसरे शब्दों में किसी का नाम ही उसकी संज्ञा है तथा इस नाम से ही उसे पहचाना जाता है। संज्ञा न हो तो पहचान अधूरी है और भाषा का प्रयोग भी बिना संज्ञा के सम्भव नहीं है।

संज्ञा के प्रकार : I. व्युत्पत्ति के आधार पर संज्ञा तीन प्रकार की होती है—रूढ़ (जैसे—कृष्ण, यमुना), यौगिक (जैसे—पनघट, पाठशाला) और योगरूढ़ (जैसे—जलज, यौगिक अर्थ—जल में उत्पन्न वस्तु, योगरूढ़ अर्थ—कमल)।

II. अर्थ की दृष्टि से संज्ञा पाँच प्रकार की होती है—व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, द्रव्यवाचक संज्ञा, समूहवाचक संज्ञा एवं भाववाचक संज्ञा।

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा *(Proper Noun)* : जो किसी व्यक्ति, स्थान या वस्तु का बोध कराती है। जैसे— राम, गंगा, पटना आदि।

2. जातिवाचक संज्ञा *(Common Noun)* : जो संज्ञा किसी जाति का बोध कराती है, वे जातिवाचक संज्ञा कही जाती हैं। जैसे—नदी, पर्वत, लड़की आदि।

'नदी' जातिवाचक संज्ञा है क्योंकि यह सभी नदियों का बोध कराती है किन्तु गंगा एक विशेष नदी का नाम है इसलिए गंगा व्यक्तिवाचक संज्ञा है।

3. द्रव्यवाचक संज्ञा *(Material Noun)* : जिस संज्ञा शब्द से उस सामग्री या पदार्थ का बोध होता है जिससे कोई वस्तु बनी है। जैसे—ठोस पदार्थ : सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, ऊन आदि; द्रव पदार्थ : तेल, पानी, घी, दही आदि; गैसीय पदार्थ : धुआँ, ऑक्सीजन आदि।

4. समूहवाचक संज्ञा *(Collective Noun)* : जो संज्ञा शब्द किसी एक व्यक्ति का वाचक न होकर समूह / समुदाय के वाचक हैं। जैसे—वर्ग, टीम, सभा, समिति, आयोग, परिवार, पुलिस, सेना, अधिकारी, कर्मचारी, ताश, टी-सेट, आर्केस्ट्रा आदि।

5. भाववाचक संज्ञा *(Abstract Noun)* : किसी भाव, गुण, दशा आदि का ज्ञान कराने वाले शब्द भाववाचक संज्ञा होते हैं। जैसे— क्रोध, मिठास, यौवन, कालिमा आदि।

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय में –आव, –त्व, –पन, –अन, –इमा, –ई, –ता, –हट आदि प्रत्यय जोड़कर किया जाता है। जैसे—

जातिवाचक संज्ञा	से	भाववाचक संज्ञा	सर्वनाम	से	भाववाचक संज्ञा
पुरुष		पुरुषत्व	अपना		अपनत्व
नारी		नारीत्व	मम		ममत्व
गुरु		गुरुत्व	निज		निजत्व
विशेषण	से	भाववाचक संज्ञा	विशेषण	से	भाववाचक स
सुन्दर		सुन्दरता, सौन्दर्य	ललित		लालित्य
वीर		वीरता, वीरत्व	लाल		लालिमा
धीर		धीरता, धैर्य	भोला		भोलापन
क्रिया	से	भाववाचक संज्ञा	क्रिया	से	भाववाचक स
घबराना		घबराहट	चढ़ना		चढ़ाई
थकना		थकान	भटकना		भटकाव
अव्यय	से	भाववाचक संज्ञा	अव्यय	से	भाववाचक स
दूर		दूरी	नीचे		नीचाई
निकट		निकटता	समीप		समीपता

संज्ञाओं के विशिष्ट प्रयोग

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा का जातिवाचक संज्ञा के रूप में कभी-कभी व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा के रूप में होता है। जैसे— आज के युग में भी हरिश्चंद्रों की कमी नहीं है। (यहाँ 'हरिश्चन्द्र' किसी व्यक्ति का नाम न होकर सत्यनिष्ठ व्यक्तियों की जाति का बोधक है।)

देश को हानि जयचंदों से होती है। (यहाँ 'जयचंदों' किसी व्यक्ति का नाम न होकर विश्वासघाती व्यक्तियों की जाति का बोधक है।)

रामचरितमानस हिन्दुओं की बाइबिल है।

2. जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवचाक संज्ञा के रूप में कभी-कभी जातिवाचक संज्ञा का प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में होता है। जैसे—

गोस्वामी जी ने रामचरितमानस की रचना की। [यहाँ 'गोस्वामी' किसी जाति का नाम न होकर व्यक्ति (गोस्वामी तुलसीदास) का बोधक है।)]

शुक्ल जी ने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा। [यहाँ 'शुक्ल' किसी जाति का नाम न होकर व्यक्ति (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल) का बोधक है।)]

पंडित जी भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे। (पंडित जवाहरलाल नेहरू)

पद-परिचय *(Parsing)* : पद-परिचय में वाक्य के प्रत्येक पद को अलग-अलग करके उसका व्याकरणिक स्वरूप बताते हुए अन्य पदों से उसका सबंध बताना पड़ता है। इसे पद-अन्वय भी कहते हैं।

संज्ञा का पद-परिचय *(Parsing of Noun)* : वाक्य में प्रयुक्त शब्दों का पद परिचय देते समय संज्ञा, उसका भेद, लिंग, वचन, कारक एवं अन्य पदों से उसका संबंध बताना चाहिए। जैसे– राम ने रावण को बाण से मारा।

1. राम : संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुलिंग, एकवचन, कर्त्ता कारक 'मारा' क्रिया का कर्त्ता।

2. रावण : संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुलिंग, एकवचन, कर्म कारक, 'मारा' क्रिया का कर्म।

3. बाण : संज्ञा, जातिवाचक, पुलिंग, एकवचन, करण कारक 'मारा' क्रिया का साधन।

संज्ञा का रूप परिवर्तन लिंग, वचन, कारक के अनुरूप होता है, अतः इन पर भी विचार करना आवश्यक है।

I. लिंग (Gender)

'लिंग' का शाब्दिक अर्थ है—चिह्न। शब्द के जिस रूप से यह जाना जाय कि वर्णित वस्तु या व्यक्ति पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, उसे लिंग कहते हैं। लिंग के द्वारा संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि शब्दों की जाति का बोध होता है।

हिन्दी में दो लिंग हैं—पुंलिंग *(Masculine)* और स्त्रीलिंग *(Feminine)*। पुंलिंग का संधि विच्छेद है—पुम् + लिंग। पुम् + लिंग में म् का अनुस्वार हो जाता है, अतः पुंलिंग लिखना चाहिए।

हिन्दी में लिंग निर्धारण : इसके लिए निम्न आधार ग्रहण किए जाते हैं—1. रूप के आधार पर, 2. प्रयोग के आधार पर एवं 3. अर्थ के आधार पर

1. रूप के आधार पर : रूप के आधार पर लिंग निर्णय का तात्पर्य है—शब्द की व्याकरणिक बनावट। शब्द की रचना में किन प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है तथा शब्दान्त में कौन-सा स्वर है—इसे आधार बनाकर शब्द के लिंग का निर्धारण किया जाता है। जैसे—

(i) पुंलिंग शब्द

1. अकारान्त, आकारान्त शब्द प्रायः पुलिंग होते हैं। जैसे—राम, सूर्य, क्रोध, समुद्र, चीता, घोड़ा, कपड़ा, घड़ा आदि।

2. वे भाववाचक संज्ञाएं जिनके अन्त में त्व, व, य होता है, वे प्रायः पुंलिंग होती हैं। जैसे—गुरुत्व, गौरव, शौर्य आदि।

3. जिन शब्दों के अन्त में पा, पन, आव, आवा, खाना जुड़े होते हैं, वे भी प्रायः पुंलिंग होते हैं। जैसे—बुढ़ापा, मोटापा, बचपन, घुमाव, भुलावा, पागलखाना।

(ii) स्त्रीलिंग शब्द

1. आकारान्त शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—लता, रमा, ममता।

2. इकारान्त शब्द भी प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं—रीति, तिथि, हानि *(किन्तु इसके अपवाद भी हैं—कवि, कपि, रवि पुंलिंग हैं)*

3. ईकारान्त शब्द भी प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—नदी, रोटी, टोपी, *(किन्तु अपवाद भी हैं। जैसे—हाथी, दही, पानी पुंलिंग हैं)*

4. आई, इया, आवट, आहट, ता, इमा प्रत्यय वाले शब्द भी स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—लिखाई, डिबिया, मिलावट, घबराहट, सुन्दरता, महिमा।

स्त्रीलिंग प्रत्यय : पुंलिंग शब्द को स्त्रीलिंग बनाने के लिए कुछ प्रत्ययों को शब्द में जोड़ा जाता है जिन्हें स्त्री० प्रत्यय कहते हैं।

संस्कृत के स्त्री प्रत्यय	उदाहरण
–आ	छात्र–छात्रा, महोदय–महोदया
–आनी	इन्द्र–इन्द्राणी, रूद्र–रूद्राणी
–इका	गायक–गायिका, नायक–नायिका
–इनी	यक्ष–यक्षिणी, योगी–योगिनी
–ई	कुमार–कुमारी, पुत्र–पुत्री
–ती	श्रीमान्–श्रीमती, भाग्यवान्–भाग्यवती
–त्री	अभिनेता–अभिनेत्री, नेता–नेत्री
–नी	पति–पत्नी, भिक्षु–भिक्षुणी

हिन्दी के स्त्री प्रत्यय	उदाहरण
–आइन	ठाकुर–ठकुराइन, पंडित–पंडिताइन
–आनी	जेठ–जेठानी, मुगल–मुगलानी
–इन	तेली–तेलिन, धोबी–धोबिन
–इया	बेटा–बिटिया, लोटा–लुटिया
–ई	काका–काकी, पोता–पोती
–नी	मोर–मोरनी, शेर–शेरनी
उर्दू के स्त्री प्रत्यय	उदाहरण
–आ	माशूक–माशूका, वालिद–वालिदा

2. प्रयोग के आधार पर : प्रयोग के आधार पर लिंग निर्णय के लिए संज्ञा शब्द के साथ प्रयुक्त विशेषण, कारक चिह्न एवं क्रिया को आधार बनाया जा सकता है। जैसे—

1. अच्छा लड़का, अच्छी लड़की।
   (लड़का पुंलिंग, लड़की स्त्रीलिंग)
2. राम की पुस्तक, राम का चाकू।
   (पुस्तक स्त्रीलिंग है, चाकू पुंलिंग है)
3. राम ने रोटी खाई। *(रोटी स्त्रीलिंग, क्रिया स्त्रीलिंग)*
   राम ने आम खाया। *(आम पुंलिंग, क्रिया पुलिंग)*

3. अर्थ के आधार पर : कुछ शब्द अर्थ की दृष्टि से समान होते हुए भी लिंग की दृष्टि से भिन्न होते हैं। उनका उचित एवं सम्यक प्रयोग करना चाहिए। जैसे—

पुंलिंग	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
कवि	कवयित्री	महान	महती
विद्वान	विदुषी	साधु	साध्वी
नेता	नेत्री	लेखक	लेखिका

उपर्युक्त शब्दों का सही प्रयोग करने पर ही शुद्ध वाक्य बनता है। जैसे—

1. आपकी महान कृपा होगी—अशुद्ध वाक्य
   आपकी महती कृपा होगी—शुद्ध वाक्य
2. वह एक विद्वान लेखिका है—अशुद्ध वाक्य
   वह एक विदुषी लेखिका है—शुद्ध वाक्य

वाक्य रचना में लिंग संबंधी अनेक अशुद्धियां होती हैं। सजग एवं सचेत रहकर ही इन अशुद्धियों का निराकरण हो सकता है।

II. वचन (Number)

परिभाषा : वचन का अभिप्राय संख्या से है। विकारी शब्दों के जिस रूप से उनकी संख्या *(एक या अनेक)* का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।

हिन्दी में केवल दो वचन हैं—एकवचन, बहुवचन।

1. एकवचन *(Singular)* : शब्द के जिस रूप से एक वस्तु या एक पदार्थ का ज्ञान होता है, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे—बालक, घोड़ा, किताब, मेज आदि।

2. बहुवचन *(Plural)* : शब्द के जिस रूप से अधिक वस्तुओं या पदार्थों का ज्ञान होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे—बालकों, घोड़ों, किताबों, मेजों आदि।

बहुवचन बनाने में प्रयुक्त प्रत्यय—

1. ए : आकारान्त पुंलिंग, तद्भव संज्ञाओं में अन्तिम 'आ' के स्थान पर 'ए' कर देने से बहुवचन हो जाता है। जैसे—

घोड़ा — घोड़े लड़का — लड़के गधा — गधे

2. एं : अकारान्त एवं आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में एं जोड़ने पर वे बहुवचन बन जाते हैं। जैसे—

पुस्तक	— पुस्तकें	बात	— बातें
सड़क	— सड़कें	गाय	— गायें
लेखिका	— लेखिकाएं	माता	— माताएं

3. यां : यां इकारान्त, ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में जुड़कर उसे बहुवचन बना देता है। जैसे—

जाति	— जातियां	रीति	— रीतियां
नदी	— नदियां	लड़की	— लड़कियां

4. ओं : ओं का प्रयोग करके भी बहुवचन बनते हैं। जैसे—

कथा	— कथाओं	साधु	— साधुओं
माता	— माताओं	बहन	— बहनों

5. कभी-कभी कुछ शब्द भी बहुवचन बनाने के लिए जोड़े जाते है। जैसे—वृन्द *(मुनिवृन्द)*, जन *(युवजन)*, गण *(कृषकगण)*, वर्ग *(छात्रवर्ग)*, लोग *(नेता लोग)* आदि।

वाक्य में वचन संबंधी अनेक अशुद्धियां होती हैं जिनका निराकरण करना आवश्यक है, जैसे—

(i) कुछ शब्द सदैव बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

प्राण	मेरे प्राण छटपटाने लगे।
दर्शन	मैंने आपके दर्शन कर लिए।
आंसू	आँखों से आँसू निकल पड़े।
होश	शेर को देखते ही मेरे होश उड़ गए।
बाल	मैंने बाल कटा दिए।
हस्ताक्षर	मैंने कागज पर हस्ताक्षर कर दिए।

(ii) कुछ शब्द नित्य एकवचन होते हैं। जैसे—

माल	माल लूट गया।
जनता	जनता भूल गई।
सामान	सामान खो गया।
सामग्री	हवन सामग्री जल गई।
सोना	सोना का भाव कम हो गया।

(iii) आदरणीय व्यक्ति के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है।

पिताजी आ रहे हैं।
तुलसी श्रेष्ठ कवि थे।
आप क्या चाहते हैं?

(iv) 'अनेकों' शब्द का प्रयोग गलत है। एक का बहुवचन अनेक है, अतः अनेकों का प्रयोग अशुद्ध माना जाता है। जैसे—

1. वहाँ अनेकों लोग थे। (अशुद्ध)
   वहाँ अनेक लोग थे। (शुद्ध)
2. बाग में अनेकों वृक्ष थे। (अशुद्ध)
   बाग में अनेक वृक्ष थे। (शुद्ध)

III. कारक (Case)

परिभाषा : संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य के अन्य पदों *(विशेषतः क्रिया)* से जो संबंध होता है, उसे कारक कहते हैं। जैसे—राम ने रावण को बाण से मारा।

इस वाक्य में राम क्रिया *(मारा)* का कर्ता है; रावण इस मारण क्रिया का कर्म है; बाण से यह क्रिया सम्पन्न की गई है, अतः बाण क्रिया का साधन होने से करण है।

कारक एवं कारक चिह्न

हिन्दी में कारकों की संख्या आठ मानी गई है। इन कारकों के नाम एवं उनके कारक चिह्नों का विवरण इस प्रकार है—

कारक	कारक चिह्न	कारक	कारक चिह्न
कर्ता	०, ने	कर्म	०, को, ए, एँ
करण	०, से, के द्वारा	सम्प्रदान	को, के लिए, ए, एँ
अपादान	से	संबंध	का, की, के,; रा, री, रे; ना, नी, ने
अधिकरण	में, पर	सम्बोधन	ऐ !, हे !, अरे ! ओ !

करण और अपादान में अन्तर : करण और अपादान दोनों कारकों में 'से' चिह्न का प्रयोग होता है किन्तु इन दोनों में मूलभूत अंतर है। करण क्रिया का साधन या उपकरण है। कर्ता कार्य सम्पन्न करने के लिए जिस उपकरण या साधन का प्रयोग करता है, उसे करण कहते हैं। जैसे—मैं कलम से लिखता हूँ।

यहाँ कलम लिखने का उपकरण है अतः कलम शब्द का प्रयोग करण कारक में हुआ है।

अपादान में अपाय *(अलगाव)* का भाव निहित है। जैसे—पेड़ से पत्ता गिरा।

अपादान कारक पेड़ में है, पत्ते में नहीं। जो अलग हुआ है उसमें अपादान कारक नहीं माना जाता अपितु जहाँ से अलग हुआ है, उसमें अपादान कारक होता है। पेड़ तो अपनी जगह स्थिर है, पत्ता अलग हो गया अतः ध्रुव *(स्थिर)* वस्तु में अपादान होगा। एक अन्य उदाहरण—वह गाँव से चला आया। यहाँ गाँव में अपादान कारक है।

कारकों की पहचान : कारकों की पहचान कारक चिह्नों से की जाती है। कोई शब्द किस कारक में प्रयुक्त है, यह वाक्य के अर्थ पर भी निर्भर है। सामान्यतः कारक निम्न प्रकार पहचाने जाते हैं—

कर्ता *(Nominative)*	क्रिया को सम्पन्न करने वाला
कर्म *(Accurative)*	क्रिया से प्रभावित होने वाला
करण *(Instrumental)*	क्रिया का साधन या उपकरण
सम्प्रदान *(Dative)*	जिससे क्रिया के उद्देश्य/प्रयोजन का बोध हो, जिसके लिए कोई क्रिया सम्पन्न की जाय या जिसे कुछ प्रदान किया जाय।
अपादान *(Ablative)*	जहाँ अलगाव हो वहाँ ध्रुव या स्थिर में अपादान होता है। अलगाव के अलावे कारण, तुलना, भिन्नता, आरंभ, सीखने आदि का बोधक
संबंध *(Genitive)*	जहाँ दो पदों का पारस्परिक संबंध बताया जाए।
अधिकरण *(Locative)*	जो क्रिया के आधार *(स्थान, समय, अवसर)* आदि का बोध कराये।
सम्बोधन *(Vocative)*	किसी को पुकार कर सम्बोधित किया जाय।

वाक्य में कारक संबंधी अनेक अशुद्धियां होती हैं। इनका निराकरण करके वाक्य को शुद्ध बनाया जाता है। जैसे—

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
तेरे को कहां जाना है?	तुझे कहाँ जाना है?
वह घोड़े के ऊपर बैठा है।	वह घोड़े पर बैठा है।
रोगी से दाल खाई गई।	रोगी के द्वारा दाल खाई गई।
मैं कलम के साथ लिखता हूं।	मैं कलम से लिखता हूं।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
मुझे कहा गया था।	मुझसे कहा गया था।
लड़का मिठाई को रोता है।	लड़का मिठाई के लिए रोता है।
इस किताब के अन्दर बहुत कुछ है।	इस किताब में बहुत कुछ है।
मैंने आज पटना जाना है।	मुझे आज पटना जाना है।
तेरे को मेरे से क्या लेना-देना ?	तुझे मुझसे क्या लेना-देना ?
उसे कह दो कि भाग जाय।	उससे कह दो कि भाग जाय।
सीता से जाकर के कह देना।	सीता से जाकर कह देना।
तुम्हारे से कोई काम नहीं हो सकता।	तुमसे कोई काम नहीं हो सकता।
मैं पत्र लिखने को बैठा।	मैं पत्र लिखने के लिए बैठा।
मैंने राम को यह बात कह दी थी।	मैंने राम से यह बात कह दी थी।
इन दोनों घरों में एक दीवार है।	इन दोनों घरों के बीच एक दीवार है।

सर्वनाम (Pronoun)

परिभाषा : सब नामों (संज्ञाओं) के बदले जो शब्द आए, वह सर्वनाम है यानी संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं। जैसे— मैं, तुम, हम, वे, आप आदि शब्द सर्वनाम हैं।

'सर्वनाम' (= सर्व + नाम) का शाब्दिक अर्थ है— सबका नाम। ये शब्द किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा प्रयुक्त न होकर सबके द्वारा प्रयुक्त होते हैं तथा किसी एक का नाम न होकर सबका नाम होते हैं। 'मैं' का प्रयोग सभी व्यक्ति अपने लिए करते हैं, अतः 'मैं' किसी एक का नाम न होकर सबका नाम अर्थात् सर्वनाम है।

सर्वनाम के भेद

सर्वनाम के छः भेद हैं—

1. पुरुषवाचक सर्वनाम *(Personal Pronoun)* : जो पुरुषों (पुरुष या स्त्री) के नाम के बदले आते हैं, उन्हे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं—उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष एवं अन्य पुरुष।

उत्तम पुरुष	मैं, हम, मैंने, हमने, मेरा, हमारा, मुझे,मुझको।
मध्यम पुरुष	तू, तुम, तुमने, तुझे, तूने, तुम्हें, तुमको, तुमसे, आपने, आपको।
अन्य पुरुष	वह, यह, वे, ये, इन, उन, उनको, उनसे, इन्हें, उन्हें, इससे, उसको।

2. निश्चयवाचक सर्वनाम *(Demonstrative Pronoun)* : निकट या दूर के व्यक्तियों या वस्तुओं का निश्चयात्मक संकेत जिन शब्दों से व्यक्त होता है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे—यह, वह, ये, वे।

(i) यह मेरी पुस्तक है। (ii) वह उनकी मेज है।
(iii) ये मेरे हथियार हैं। (iv) वे तुम्हारे आदमी हैं।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम *(Indefinite Pronoun)* : जिन सर्वनामों से किसी निश्चित वस्तु का बोध नहीं होता उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे— कोई, कुछ।

(i) कोई आ गया तो क्या करोगे ?
(ii) उसने कुछ नहीं लिया।

कभी-कभी कुछ 'शब्द-समूह' भी अनिश्चय सर्वनाम के रूप में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—1. कुछ न कुछ, 2. कोई न कोई, 3. सब कुछ, 4. हर कोई, 5. कुछ भी, 6. कुछ-कुछ आदि।

4. संबंधवाचक सर्वनाम *(Relative Pronoun)* : जिस सर्वनाम से किसी दूसरे सर्वनाम से संबंध स्थापित किया जाय, उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे— जो, सो।

जो आया है, सो जायेगा यह ध्रुव सत्य है।

5. प्रश्नवाचक सर्वनाम *(Interrogative Pronoun)*: प्रश्न करने के लिए प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम शब्दों को प्रश्नवाचक सर्वनाम कहा जाता है। जैसे— कौन, क्या।

(i) कौन आया था ?
(ii) वह क्या कह रहा था ?
(iii) दूध में क्या गिर पड़ा ?

6. निजवाचक सर्वनाम *(Reflexive Pronoun)* : निजवाचक सर्वनाम है—आप। यह 'अपने आप', स्वतः, 'स्वयं' या 'खुद' के लिए प्रयुक्त सर्वनाम है। जैसे—यह कार्य मैं 'आप' ही कर लूंगा।

ध्यान रहे कि यहाँ प्रयुक्त 'आप' स्वयं के लिए प्रयुक्त है जो कि पुरुषवाचक मध्यम पुरुष आदरसूचक सर्वनाम 'आप' से अलग है।

निजवाचक सर्वनाम 'आप' का प्रयोग इन स्थितियों में होता है—

(i) किसी संज्ञा या सर्वनाम के अवधारण/निश्चय के लिए; जैसे—मैं आप वहीं से आया हूँ।
(ii) दूसरे व्यक्ति के निराकरण के लिए; जैसे—वह औरों को नहीं, अपने को, सुधार रहा है।
(iii) सर्वसाधारण के अर्थ में; जैसे—आप भला तो जग भला। अपने से बड़ों का आदर करना चाहिए।

सर्वनाम : एक नजर में

1.	पुरुषवाचक	(a) उत्तम पुरुष—मैं; हम/हमलोग
		(b) मध्यम पुरुष—तू, तुम, आप; तुमलोग, आपलोग
		(c) अन्य पुरुष—यह, ये, वह वे; ये लोग, वे लोग
2.	निश्चयवाचक	(a) निकटवर्ती—यह, ये
		(b) दूरवर्ती—वह, वे
3.	अनिश्चयवाचक	(a) प्राणि बोधक—कोई
		(b) वस्तु बोधक—कुछ
4.	सम्बन्धवाचक	जो, सो
5.	प्रश्नवाचक	(a) प्राणि बोधक—कौन; कौन-कौन
		(b) वस्तु बोधक—क्या; क्या-क्या
6.	निजवाचक	आप

नोट : जब 'यह', 'वह', 'कोई', 'कुछ','जो', 'सो' अकेले आते हैं तो सर्वनाम होते हैं और जब किसी संज्ञा के साथ आते हैं तो विशेषण हो जाते हैं। जैसे—

यह आ गई। *(यहाँ 'यह' सर्वनाम है।)*
यह किताब कैसी है। *(यहाँ 'यह' विशेषण है।)*

सर्वनाम के विकारी रूप : विभिन्न कारकों में प्रयुक्त होने पर सर्वनाम शब्दों के रूप परिवर्तित हो जाते हैं। सर्वनाम का प्रयोग सम्बोधन में नहीं होता। इसके विकारी रूप हैं—मैंने, मुझको, मुझसे, हमने, हमको, हमसे, मेरा, हमारा, उसने, उसको, तुमने, तुमको, आपने, आपको, तुझे, तुम्हारा, तुमसे, इसने, इसको, किसको आदि।

सर्वनाम का पद परिचय *(Parsing of Pronoun)*: किसी वाक्य में प्रयुक्त सर्वनाम का पद-परिचय देने के लिए पहले सर्वनाम का भेद, लिंग, वचन, कारक एवं अन्य पदों से उसका सम्बन्ध बताना पड़ता है। जैसे—(i) मैं पुस्तक पढ़ता हूं।

मैं—सर्वनाम, पुरुषवाचक, उत्तम पुरुष, पुलिंग, एकवचन, कर्ता कारक, पढ़ना क्रिया का कर्ता। जैसे—(ii)चाय में कुछ पड़ा है।

कुछ—सर्वनाम, अनिश्चयवाचक, पुलिंग, एकवचन, कर्मकारक, पड़ा क्रिया का कर्म।

विशेषण (Adjective)

परिभाषा : संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

जो शब्द विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहा जाता है और जिसकी विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहा जाता है। जैसे—मोटा लड़का हँस पड़ा। यहाँ 'मोटा' विशेषण है तथा 'लड़का' विशेष्य *(संज्ञा)* है।

विशेषण के भेद—विशेषण मूलतः चार प्रकार के होते हैं—

1. सार्वनामिक विशेषण *(Demonstrative Adjective)* : विशेषण के रूप में प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम को सार्वनामिक विशेषण कहा जाता है। इनके दो उपभेद हैं—

(i) मौलिक सार्वनामिक विशेषण : जो सर्वनाम बिना रूपान्तर के मौलिक रूप में संज्ञा के पहले आकर उसकी विशेषता बतलाते हैं उन्हें इस वर्ग में रखा जाता है। जैसे—

1. यह घर मेरा है।
2. वह किताब फटी है।
3. कोई आदमी रो रहा है।

(ii) यौगिक सार्वनामिक विशेषण : जो सर्वनाम रूपान्तरित होकर संज्ञा शब्दों की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें यौगिक सार्वनामिक विशेषण कहा जाता है। जैसे—

1. ऐसा आदमी नहीं देखा।
2. कैसा घर चाहिए?
3. जैसा देश वैसा भेष।

2. गुणवाचक विशेषण *(Adjective of Quality)*: जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम के गुण-धर्म, स्वभाव का बोध कराते हैं, उन्हें गुणवाचक सर्वनाम कहते हैं। गुणवाचक विशेषण अनेक प्रकार के हो सकते हैं। जैसे—

कालबोधक	नया, पुराना, ताजा, मौसमी, प्राचीन।
रंगबोधक	लाल, पीला, काला, नीला, बैंगनी, हरा।
दशाबोधक	मोटा, पतला, युवा, वृद्ध, गीला, सूखा।
गुणबोधक	अच्छा, भला, बुरा, कपटी, झूठा, सच्चा, पापी, न्यायी, सीधा, सरल।
आकारबोधक	गोल, चौकोर, तिकोना, लम्बा, चौड़ा, नुकीला, सुडौल, पतला, मोटा।

3. संख्यावाचक विशेषण *(Adjective of Number)* : जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम की संख्या का बोध कराते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहा जाता है। ये दो प्रकार के होते हैं—

(i) निश्चित संख्यावाचक : इनसे निश्चित संख्या का बोध होता है। जैसे— दस लड़के, बीस आदमी, पचास रुपये।

निश्चित संख्यावाचक विशेषणों को प्रयोग के अनुसार निम्न भेदों में विभक्त किया जा सकता है—

गणनावाचक	एक, दो, चार, आठ, बारह।
क्रमवाचक	पहला, दसवां, सौवां, चौथा।
आवृत्तिवाचक	तिगुना, चौगुना, सौगुना।
समुदायवाचक	चारों, आठों, तीनों।

(ii) अनिश्चित संख्यावाचक : इनसे अनिश्चित संख्या का बोध होता है। जैसे—

1. कुछ आदमी चले गए।
2. कई लोग आए थे।
3. सब कुछ समाप्त हो गया।

4. परिमाणबोधक विशेषण *(Adjective of Quantity)* : जिन विशेषणों से संज्ञा अथवा सर्वनाम के परिमाण का बोध होता है, उन्हें परिमाणबोधक विशेषण कहते हैं। इनके भी दो भेद हैं—

निश्चित परिमाणबोधक	दस किलो घी, पांच क्विंटल गेहूं।
अनिश्चित परिमाणबोधक	बहुत घी, थोड़ा दूध।

प्रविशेषण *(Adverb)*: वे शब्द जो विशेषणों की विशेषता बतलाते हैं, प्रविशेषण कहे जाते हैं। जैसे—

1. वह बहुत तेज दौड़ता है।

   यहां 'तेज' विशेषण है और 'बहुत' प्रविशेषण है क्योंकि यह तेज की विशेषता बतला रहा है।

2. सीता अत्यन्त सुन्दर है।

   यहाँ 'सुन्दर' विशेषण है तथा 'अत्यन्त' प्रविशेषण है।

विशेषणार्थक प्रत्यय : संज्ञा शब्दों को विशेषण बनाने के लिए उनमें जिन प्रत्ययों को जोड़ा जाता है, उन्हें विशेषणार्थक प्रत्यय कहते हैं। जैसे—

प्रत्यय	संज्ञा शब्द	विशेषण	प्रत्यय	संज्ञा शब्द	विशेषण
ईला	चमक	चमकीला	ई	धन	धनी
इक	अर्थ	आर्थिक	वान	दया	दयावान
मान	बुद्धि	बुद्धिमान	ईय	भारत	भारतीय

विशेषण की तुलनावस्था : इन्हें तुलनात्मक विशेषण भी कहा जाता है। विशेषण की तीन अवस्थाएं तुलनात्मक रूप में हो सकती हैं—मूलावस्था *(Positive Degree)*, उत्तरावस्था *(Comparative Degree)* एवं उत्तमावस्था *(Superlative Degree)*। जैसे—

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था	मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
लघु	लघुतर	लघुतम	सुन्दर	सुन्दरतर	सुन्दरतम
कोमल	कोमलतर	कोमलतम	बृहत्	बृहत्तर	बृहत्तम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम	महत्	महत्तर	महत्तम

विशेषण का पद-परिचय *(Parsing of Adjective)* : वाक्य में विशेषण पदों का अन्वय *(पद-परिचय)* करते समय उसका स्वरूप—भेद, लिंग, वचन, कारक और विशेष्य बताया जाता है। जैसे—

काला कुत्ता मर गया।

काला—विशेषण, गुणवाचक, रंगबोधक, पुलिंग, एकवचन, विशेष्य— कुत्ता।

मुझे थोड़ी बहुत जानकारी है।

थोड़ी बहुत—विशेषण, अनिश्चित संख्यावाचक, स्त्रीलिंग, कर्मवाचक, विशेष्य—जानकारी।

क्रिया (Verb)

परिभाषा : जिस शब्द से किसी कार्य का होना या करना समझा जाय, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे—खाना, पीना, पढ़ना, सोना, रहना, जाना आदि।

धातु : क्रिया के मूल रूप (मूलांश) को धातु कहते हैं। 'धातु' से ही क्रिया पद का निर्माण होता है इसीलिए क्रिया के सभी रूपों में 'धातु' उपस्थित रहती है। जैसे—

चलना क्रिया में 'चल' धातु है।
पढ़ना क्रिया में 'पढ़' धातु है।

प्रायः धातु में '-ना' प्रत्यय जोड़कर क्रिया का निर्माण होता है।

पहचान : धातु पहचानने का अक सरल सूत्र है कि दिये गए शब्दांश में '–ना' लगाकर देखें और यदि '-ना' लगने पर क्रिया बने तो समझना चाहिए कि वह शब्दांश धातु है।

धातु के दो भेद हैं—मूल धातु, यौगिक धातु।

(i) मूल धातु : यह स्वतन्त्र होती है तथा किसी अन्य शब्द पर निर्भर नहीं होती, जैसे—जा, खा, पी, रह आदि।

(ii) यौगिक धातु : यौगिक धातु मूल धातु में प्रत्यय लगाकर, कई धातुओं को संयुक्त करके अथवा संज्ञा और विशेषण में प्रत्यय लगाकर बनाई जाती है। यह तीन प्रकार की होती है—

1. प्रेरणार्थक क्रिया *(धातु)* : प्रेरणार्थक क्रियाएँ अकर्मक एवं सकर्मक दोनों क्रियाओं से बनती हैं। 'आना'/'लाना' जोड़ने से प्रथम प्रेरणार्थक एवं 'वाना' जोड़ने से द्वितीय प्रेरणार्थक रूप बनते हैं। जैसे—

मूल धातु	प्रेरणार्थक धातु	मूल धातु	प्रेरणार्थक धातु
उठ-ना	उठाना, उठवाना	सो-ना	सुलाना, सुलवाना
दे-ना	दिलाना, दिलवाना	खा-ना	खिलाना, खिलवाना
कर-ना	कराना, करवाना	पी-ना	पिलाना, पिलवाना

2. यौगिक क्रिया *(धातु)* : दो या दो से अधिक धातुओं के संयोग से यौगिक क्रिया बनती है। जैसे—रोना-धोना, उठना-बैठना, चलना-फिरना, खा लेना, उठ बैठना, उठ जाना।

3. नाम धातु : संज्ञा या विशेषण से बनने वाली धातु को नाम धातु कहते हैं। जैसे—गाली से गरियाना, लात से लतियाना, बात से बतियाना; गरम से गरमाना, चिकना से चिकनाना, ठंडा से ठंडाना।

क्रिया के भेद : कर्म के अनुसार या रचना की दृष्टि से क्रिया के दो भेद हैं— (i) सकर्मक क्रिया, (ii) अकर्मक क्रिया

1. सकर्मक क्रिया *(Transitive Verb)* : जिस क्रिया के साथ कर्म हो या कर्म की संभावना हो तथा जिस क्रिया का फल कर्म पर पड़ता हो, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे—

(i) राम फल खाता है। *(खाना क्रिया के साथ फल कर्म है)*
(ii) सीता गीत गाती है। *(गाना क्रिया के साथ गीत कर्म है)*
(iii) मोहन पढ़ता है। *(पढ़ना क्रिया के साथ पुस्तक कर्म की संभावना बनती है)*

2. अकर्मक क्रिया *(Intransitive Verb)* : अकर्मक क्रिया के साथ कर्म नहीं होता तथा उसका फल कर्ता पर पड़ता है। जैसे—जैसे—

(i) राधा रोती है। *(कर्म का अभाव है तथा रोती है क्रिया का फल राधा पर पड़ता है)*
(ii) मोहन हँसता है। *(कर्म का अभाव है तथा हँसता है क्रिया का फल मोहन पर पड़ता है)*

पहचान : सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं की पहचान 'क्या' और 'किसको' प्रश्न करने से होती है। यदि दोनों का उत्तर मिले, तो समझना चाहिए कि क्रिया सकर्मक है और यदि न मिले तो अकर्मक। जैसे—

1. राम फल खाता है। *(प्रश्न करने पर कि राम क्या खाता है, उत्तर मिलेगा फल। अतः 'खाना' क्रिया सकर्मक है।)*
2. बालक रोता है। *(प्रश्न करने पर कि बालक क्या रोता है, कोई उत्तर नहीं मिलता, बालक किसको रोता है कोई उत्तर नहीं मिलता। अतः 'रोना' क्रिया अकर्मक है।)*

क्रिया के कुछ अन्य भेद निम्नवत् हैं

1. सहायक क्रिया *(Helping Verb)* : सहायक क्रिया मुख्य क्रिया के साथ प्रयुक्त होकर अर्थ को स्पष्ट एवं पूर्ण करने में सहायता करती है। जैसे—

(i) मैं घर जाता हूँ। *(यहाँ 'जाना' मुख्य क्रिया है और 'हूँ' सहायक क्रिया है)*
(ii) वे हँस रहे थे। *(यहाँ 'हँसना' मुख्य क्रिया है और 'रहे थे' सहायक क्रिया है)*

2. पूर्वकालिक क्रिया *(Absolutive Verb)* : जब कर्ता एक क्रिया को समाप्त कर दूसरी क्रिया करना प्रारम्भ करता है तब पहली क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहा जाता है। जैसे—राम भोजन करके सो गया।

यहाँ भोजन करके पूर्वकालिक क्रिया है, जिसे करने के बाद उसने दूसरी क्रिया *(सो जाना)* सम्पन्न की है।

3. नामबोधक क्रिया *(Nominal Verb)* : संज्ञा अथवा विशेषण के साथ क्रिया जुड़ने से नामबोधक क्रिया बनती है। जैसे—

	संज्ञा	+	क्रिया	=	नामबोधक क्रिया
1.	लाठी	+	मारना	=	लाठी मारना
2.	रक्त	+	खौलना	=	रक्त खौलना
	विशेषण	+	क्रिया	=	नामबोधक क्रिया
1.	दुःखी	+	होना	=	दुःखी होना
2.	पीला	+	पड़ना	=	पीला पड़ना

4. द्विकर्मक क्रिया *(Double Transitive Verb)* : जिस क्रिया के दो कर्म होते हैं उसे द्विकर्मक क्रिया कहा जाता है। जैसे—

(i) अध्यापक ने छात्रों को हिन्दी पढ़ाई।
(दो कर्म—छात्रों, हिन्दी)
(ii) श्याम ने राम को थप्पड़ मार दिया।
(दो कर्म—राम, थप्पड़)

'कर्म + को/से' को अप्रधान/गौण कर्म एवं 'कर्म-को/से' को प्रधान कर्म कहते हैं; जैसे—पहले वाक्य में 'छात्रों को' अप्रधान कर्म एवं 'हिन्दी' प्रधान कर्म है।

5. संयुक्त क्रिया *(Compound Verb)* : जब कोई क्रिया दो क्रियाओं के संयोग से निर्मित होती है, तब उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं। जैसे—

(i) वह खाने लगा।
(ii) मुझे पढ़ने दो।
iii) वह पेड़ से कूद पड़ा।
(iv) मैंने किताब पढ़ ली।

(v) वह खेलती-कूदती रहती है।
(vi) आप आते-जाते रहिए।
(vii) चिड़ियां उड़ा करती हैं।
(viii) अब त्यागपत्र दे ही डालो।

6. क्रियार्थक संज्ञा *(Verbal Noun)*: जब कोई क्रिया संज्ञा की भांति व्यवहार में आती है तब उसे क्रियार्थक संज्ञा कहते हैं। जैसे—

(i) टहलना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।
(ii) देश के लिए मरना कीर्तिदायक है।

क्रिया के सम्बन्ध में 'वाच्य' और 'काल' भी विचारणीय हैं :

1. वाच्य *(Voice)*: वाच्य क्रिया का रूपान्तरण है जिसके द्वारा यह पता चलता है कि वाक्य में कर्ता, कर्म या भाव में से किसकी प्रधानता है। वाच्य के तीन भेद हैं—

(i) कर्तृवाच्य *(Active Voice)*: क्रिया के उस रूपान्तरण को कर्तृवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध होता है। यह वाच्य सकर्मक और अकर्मक दोनों से बनता है। जैसे—
1. राम ने दूध पिया। 2. सीता गाती है।
3. मैं स्कूल गया।

(ii) कर्मवाच्य *(Passive Voice)*: क्रिया के उस रूपान्तरण को कर्मवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्म की प्रधानता का बोध होता है। यह वाच्य सकर्मक क्रिया से बनता है, जैसे—
1. लेख लिखा गया। 2. गीत गाया गया।
3. पुस्तक पढ़ी गई।

(iii) भाववाच्य *(Impersonal Voice)*: क्रिया का वह रूपान्तर भाववाच्य कहलाता है, जिससे वाक्य में 'भाव' *(या क्रिया)* की प्रधानता का बोध होता है। यह वाच्य अकर्मक क्रिया से बनता है। जैसे—
1. मुझसे चला नहीं जाता।
2. उससे चुप नहीं रहा जाता।
3. सीता से हँसा नहीं जाता।

वाच्य के प्रयोग : वाक्य में क्रिया किसका अनुसरण कर रही है—कर्ता, कर्म, या भाव का— इस आधार पर तीन प्रकार के 'प्रयोग' माने गए हैं—

(i) *कर्तरि प्रयोग* : जब वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार हों, तब कर्तरि प्रयोग होता है। जैसे—
1. राम पुस्तक पढ़ता है। *(क्रिया कर्तानुसारी है)*
2. सीता आम खाती है। *(क्रिया कर्तानुसारी है)*

(ii) *कर्मणि प्रयोग* : जब वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार हों, तब कर्मणि प्रयोग होता है। जैसे—
1. राधा ने गीत गाया।
(क्रिया कर्म के अनुसार पुलिंग है)
2. मोहन ने किताब पढ़ी।
(क्रिया कर्म के अनुसार स्त्रीलिंग है)

(iii) भावे प्रयोग : जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष, कर्ता अथवा कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार न होकर सदैव पुलिंग, एकवचन और अन्य पुरुष में हो तब भावे प्रयोग होता है। जैसे—
1. राम से रोया नहीं जाता।
2. सीता से रोया नहीं जाता।
3. लड़कों से रोया नहीं जाता।

इन तीनों वाक्यों में कर्ता के बदलने पर भी क्रिया अपरिवर्तित है तथा वह पुलिंग, एकवचन और अन्य पुरुष में है अतः ये भावे प्रयोग हैं।

2. काल *(Tense)*: क्रिया के जिस रूप से कार्य व्यापार के समय तथा उसकी पूर्णता अथवा अपूर्णता का बोध होता है, उसे काल कहते हैं।

काल के तीन भेद होते हैं—

(i) वर्तमान काल *(Present Tense)*: वर्तमान काल में क्रिया व्यापार की निरन्तरता रहती है। इसके पांच भेद हैं :

सामान्य वर्तमान *(Imperfect/Simple Present/ Present Indefinite)*	वह पढ़ता है।
तात्कालिक वर्तमान *(Present Continuous)*	वह पढ़ रहा है।
पूर्ण वर्तमान *(Present Perfect)*	वह पढ़ चुका है।
संदिग्ध वर्तमान *(Doubtful Present)*	वह पढ़ता होगा।
संभाव्य वर्तमान *(Present Conjunctive)*	वह पढ़ता हो।

(ii) भूतकाल *(Past Tense)*: भूतकाल में क्रिया व्यापार की समाप्ति का बोध होता है। इसके छः भेद हैं :

सामान्य भूत *(Simple Past/Past Indefinite)*	सीता गयी।
आसन्न भूत *(Recent Past)*	सीता गयी है।
पूर्ण भूत *(Past Perfect)*	सीता गयी थी।
अपूर्ण भूत *(Past Imperfect/Continuous)*	सीता जा रही थी।
संदिग्ध भूत *(Doubtful Past)*	सीता गयी होगी।
हेतुहेतुमद्भूत *(Conditional Past)*	सीता जाती। *(क्रिया होने वाली थी, पर हुई नहीं)*

(iii) भविष्यत् काल *(Future Tense)* : भविष्य में होने वाली क्रिया का बोध भविष्यत् काल से होता है। इसके तीन भेद हैं :

सामान्य भविष्यत् *(Simple Future/ Future Indefinite)*	राम पढ़ेगा।
संभाव्य भविष्यत् *(Future Conjunctive)*	सम्भव है राम पढ़े।
हेतुहेतुमद् भविष्यत् *Conditional Future)*	छात्रवृत्ति मिले, तो राम पढ़े। *(इसमें एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर है)*

क्रिया का पद-परिचय *(Parsing of Verb)*: क्रिया के पद-परिचय में क्रिया, क्रिया का भेद, वाच्य, लिंग, पुरुष, वचन, काल और वह शब्द जिससे क्रिया का संबंध है, बतानी चाहिए। जैसे—

1. राम ने पुस्तक पढ़ी।
पढ़ी— क्रिया, सकर्मक, कर्मवाच्य, स्त्रीलिंग, एकवचन, अन्य पुरुष, सामान्य भूत, कर्म पुस्तक से सम्बन्धित।
2. मोहन कल जायेगा।
जायेगा— क्रिया, अकर्मक, कर्तृवाच्य, पुलिंग, एकवचन, अन्य पुरुष, सामान्य भविष्यत्, कर्ता मोहन से सम्बन्धित।

अव्यय (Indeclinables)

परिभाषा : ऐसे शब्द जिनमें लिंग, वचन, पुरुष, कारक आदि के कारण कोई विकार नहीं आता, अव्यय कहलाते हैं।

ये शब्द सदैव अपरिवर्तित, अविकारी एवं अव्यय रहते हैं। इनका मूल रूप स्थिर रहता है, कभी बदलता नहीं। जैसे—आज, कब, इधर, किन्तु, परन्तु, क्यों, जब, तब, और, अतः, इसलिए आदि।

अव्यय के भेद : अव्यय के चार भेद हैं :

1. क्रिया विशेषण *(Adverb)* : जो शब्द क्रिया की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहा जाता है।

अर्थ के आधार पर क्रिया विशेषण चार प्रकार के होते हैं :

(a) स्थानवाचक

स्थितिवाचक	यहाँ, वहाँ, भीतर, बाहर।
दिशावाचक	इधर, उधर, दाएं, बाएं।

(b) कालवाचक

समयवाचक	आज, कल, अभी, तुरन्त।
अवधिवाचक	रात भर, दिन भर, आजकल, नित्य।
बारबारतावाचक	हर बार, कई बार, प्रतिदिन।

(c) परिमाणवाचक

अधिकताबोधक	बहुत, खूब, अत्यन्त, अति।
न्यूनताबोधक	जरा, थोड़ा, किंचित्, कुछ।
पर्याप्तिबोधक	बस, यथेष्ट, काफी, ठीक।
तुलनाबोधक	कम, अधिक, इतना, उतना।
श्रेणीबोधक	बारी-बारी, तिल-तिल, थोड़ा-थोड़ा।

(d) रीतिवाचक

ऐसे, वैसे, जैसे, मानो, धीरे, अचानक, कदाचित्, अवश्य, इसलिए, तक, सा, तो, हाँ, जी, यथासम्भव।

2. सम्बन्धबोधक *(Preposition)* : जो अव्यय किसी संज्ञा के बाद आकर उस संज्ञा का संबंध वाक्य के दूसरे शब्द से दिखाते हैं, उन्हें संबंध बोधक कहते हैं। जैसे—वह दिन भर काम करता रहा। मैं विद्यालय तक गया था। मनुष्य पानी के बिना जीवित नहीं रह सकता।

अर्थ के आधार पर सम्बन्धबोधक अव्यय के चौदह प्रकार हैं—

स्थानवाचक	आगे, पीछे, निकट, समीप, सामने, बाहर
दिशावाचक	आसपास, ओर, तरफ, दायाँ, बायाँ
कालवाचक	पहले, बाद, आगे, पश्चात, अब, तक
साधनवाचक	द्वारा, माध्यम, सहारे, जरिए, मार्फत
उद्देश्यवाचक	लिए, वास्ते, हेतु, निमित्त
व्यतिरेकवाचक	अलावा, अतिरिक्त, सिवा, बगैर, बिना, रहित
विनिमयवाचक	बदले, एवज, स्थान पर, जगह पर
सादृश्यवाचक	समान, तुल्य, बराबर, योग्य, तरह, सरीखा
विरोधवाचक	विरोध, विरुद्ध, विपरीत, खिलाफ
साहचर्यवाचक	साथ, संग, सहित, समेत
विषयवाचक	संबंध, विषय, आश्रय, भरोसे
संग्रहवाचक	लगभग, भर, मात्र, तक, अन्तर्गत
तुलनावाचक	अपेक्षा, बनिस्बत, समक्ष, समान
कारणवाचक	कारण, परेशानी से, मारे, चलते

3. समुच्चयबोधक *(Conjunction)* : दो वाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले शब्द समुच्चयबोधक अव्यय कहे जाते हैं। जैसे—

सूरज निकला और पक्षी बोलने लगे।

यहां 'और' समुच्चयबोधक अव्यय है।

समुच्चयबोधक अव्यय मूलतः दो प्रकार के होते हैं :

(i) समानाधिकरण (ii) व्यधिकरण

पुनः समानाधिकरण समुच्चयबोधक के चार उपभेद हैं :

संयोजक	और, व, एवं, तथा।
विभाजक	या, वा, अथवा, किंवा, नहीं तो।
विरोध-दर्शक	पर, परन्तु, लेकिन, किन्तु, मगर, बल्कि, वरन्।
परिणाम-दर्शक	इसलिए, अतः, अतएव।

व्यधिकरण समुच्चयबोधक के भी चार उपभेद हैं :

कारणवाचक	क्योंकि, चूँकि, इसलिए कि।
उद्देश्यवाचक	कि, जो, जोकि, ताकि।
संकेतवाचक	जो....तो, यदि....तो, यद्यपि....तथापि।
स्वरूपवाचक	कि, जो, अर्थात्, यानी।

4. विस्मयादिबोधक *(Interjection)* : जिन अव्ययों से हर्ष, शोक, घृणा, आदि भाव व्यंजित होते हैं तथा जिनका संबंध वाक्य के किसी पद से नहीं होता, उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं, जैसे—हाय ! वह चल बसा।

इस अव्यय के निम्न उपभेद हैं :

हर्षबोधक	वाह !, आहा !, धन्य !, शाबाश !, जय!
शोकबोधक	हाय !, हा! आह !, अह!, ऊह! काश! त्राहि-त्राहि !
आश्चर्यबोधक	ऐं !, क्या !, ओहो !, हैं !
स्वीकारबोधक	हाँ !, जी हाँ !, अच्छा !, जी !, ठीक !
अनुमोदनबोधक	ठीक !, अच्छा !, हाँ-हाँ ! हो!
तिरस्कारबोधक	छिः !, हट !, धिक् !, दुर् !
सम्बोधनबोधक	अरे !, रे !, री!, भई!, अजी !, हे !, अहो !

निपात : मूलतः निपात का प्रयोग अव्ययों के लिए होता है। लेकिन ये शुद्ध अवयव नहीं होते। इनका कोई लिंग, वचन नहीं होता। निपातों का प्रयोग निश्चित शब्द, शब्द-समूह या पूरे वाक्य को अन्य (अतिरिक्त) भावार्थ प्रदान करने के लिए होता है। निपात सहायक शब्द होते हुए भी वाक्य के अंग नहीं होते। पर वाक्य में इनके प्रयोग से उस वाक्य का समग्र अर्थ प्रभावित होता है। निपात नौ प्रकार के होते हैं—

स्वीकृतिबोधक	हाँ, जी, जी हाँ।
नकारबोधक	जी नहीं, नहीं।
निषेधात्मक	मत।
प्रश्नबोधक	क्या।
विस्मयादिबोधक	क्या, काश।
तुलनाबोधक	सा।
अवधारणाबोधक	ठीक, करीब, लगभग, तकरीबन।
आदरबोधक	जी।
बलप्रदायक	तो, ही, भी, तक, भर, सिर्फ, केवल।

हिन्दी में अधिकांशतः निपात उस शब्द या शब्द-समूह के बाद आते हैं, जिनको वे विशिष्टता या बल प्रदान करते हैं, जैसे—

रमेश ने ही मुझे मारा था। (अर्थात् रमेश के अलावा और किसी ने नहीं मारा था।)

रमेश ने मुझे ही मारा था। (अर्थात् मुझे ही मारा था और किसी को नहीं।)

रमेश ने मुझे मारा ही था। (अर्थात् मारा ही था गाली आदि नहीं दी थी।)

इस प्रकार निपात वाक्यों में नया अथवा गहन भाव प्रकट करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अव्यय का पद-परिचय *(Parsing of Indeclinables)*: वाक्य में अव्यय का पद-परिचय देने के लिए अव्यय, उसका भेद, उससे संबंध रखने वाला पद—इतनी बातों का उल्लेख करना चाहिए। जैसे—वह धीरे-धीरे चलता है।

धीरे-धीरे—अव्यय, क्रिया विशेषण, रीतिवाचक, क्रिया चलता की विशेषता बताने वाला।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. वस्तु, स्थान, भाव या विचार के द्योतक शब्द को क्या कहते हैं?
(a) संज्ञा (b) सर्वनाम (c) विशेषण (d) विशेष्य

2. व्युत्पत्ति के आधार पर संज्ञा के कितने भेद होते हैं?
(a) 3 (b) 4 (c) 5 (d) 6

3. 'स्त्रीत्व' शब्द में कौन-सी संज्ञा है?
(a) जातिवाचक संज्ञा (b) व्यक्तिवाचक संज्ञा
(c) भाववाचक संज्ञा (d) द्रव्यवाचक संज्ञा
(रेलवे, 1997)

4. 'भारतीय' शब्द का बहुवचन है—
(a) भारतीयों (b) भारतिओं
(c) भारतियों (d) इनमें से कोई नहीं
(रेलवे, 1997)

5. 'सूर्य' शब्द का स्त्रीलिंग क्या होगा?
(a) सूर्याणी (b) सूर्या (c) सूर्यायी (d) सूर्यो
(रेलवे, 1997)

6. 'बुढ़ापा भी एक प्रकार का अभिशाप है'—इस वाक्य में रंगीन छपे शब्द की संज्ञा बताइए—
(a) जातिवाचक संज्ञा (b) व्यक्तिवाचक संज्ञा
(c) भाववाचक संज्ञा (d) इनमें से कोई नहीं
(रेलवे, 1998)

7. निम्नलिखित शब्दों में से कौन-सा शब्द संज्ञा है?
(a) क्रुद्ध (b) क्रोध (c) क्रोधी (d) क्रोधित
(बी० एड०, 1998)

8. 'आँसू' का बहुवचन क्या होगा?
(a) आँसू (b) आँसूएँ
(c) आँसुओं (d) इनमें से कोई नहीं
(रेलवे, 1998)

9. निम्नलिखित शब्दों में से एक शब्द पुंलिंग है, उसे बताइए—
(a) बुढ़ापा (b) जड़ता (c) घटना (d) दया
(बी० एड०, 1998)

10. निम्नलिखित वाक्य को पढ़िए तथा उसमें कारक के सही भेद को पहचानिए—
हे प्रभो! मेरी इच्छा पूर्ण करो।
(a) अधिकरण कारक (b) संबंध कारक
(c) संबोधन कारक (d) अपादान कारक*(रेलवे, 1998)*

11. भाववाचक संज्ञा बनाइए—
(a) लड़कापन (b) लड़काई (c) लड़कपन (d) लड़काईपन
(बी० एड०, 1999)

12. 'सच्चरित्रता' किस मूल शब्द से बना है?
(a) सतचरित्र (b) चरित्र (c) चरित्रता (d) सच्चरित्र
(बी० एड०, 1999)

13. कौन-सा शब्द बहुवचन है?
(a) माता (b) प्राण
(c) लड़का (d) किताब *(बी० एड०, 1999)*

14. निम्नलिखित में कौन-सा शब्द पुंलिंग है?
(a) कपट (b) सुन्दरता
(c) मूर्खता (d) निद्रा *(बी० एड०, 1999)*

15. 'गीदड़' का स्त्रीलिंग क्या होगा?
(a) गीदड़िन (b) गीदड़नी
(c) गीदड़ी (d) गिदड़िया *(बी० एड०, 1999)*

16. किस वाक्य में अपादान कारक है?
(a) राम ने रावण को तीर से मारा।
(b) मोहन से अब सहा नहीं जाता।
(c) हिमालय से गंगा निकलती है।
(d) चाकू से फल काटो। *(बी० एड०, 2000)*

17. हिन्दी में शब्दों का लिंग निर्धारण किसके आधार पर होता है
(a) संज्ञा (b) सर्वनाम
(c) क्रिया (d) प्रत्यय *(रेलवे, 2001)*

18. निम्नलिखित में भाववाचक संज्ञा कौन-सी है?
(a) शत्रुता (b) वीर
(c) मनुष्य (d) गुरु *(रेलवे, 2001)*

19. निम्नलिखित शब्दों में से स्त्रीलिंग शब्दों का चयन कीजिए—
(a) अपराध (b) अध्याय
(c) स्वदेश (d) स्थापना *(रेलवे, 2001)*

20. अर्थ के विचार से संज्ञा कितने प्रकार के होते हैं?
(a) 4 (b) 5 (c) 6 (d) 7
(बैंक परीक्षा, 2002)

21. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा है?
(a) गाय (b) पहाड़
(c) यमुना (d) आम *(रेलवे, 2002)*

22. कौन-सा शब्द जातिवाचक संज्ञा नहीं है?
(a) जवान (b) बालक (c) सुन्दर (d) मनुष्य
(बैंक परीक्षा, 2002)

23. कौन-सा शब्द भाववाचक संज्ञा नहीं है?
(a) मिठाई (b) चतुराई
(c) लड़ाई (d) उतराई *(रेलवे, 2002)*

24. जातिवाचक संज्ञा बताएँ—
(a) लड़का (b) सेना
(c) श्याम (d) दुःख *(बैंक परीक्षा, 2002)*

25. कौन-सा शब्द स्त्रीलिंग है?
(a) सहारा (b) सूचीपत्र
(c) सियार (d) परिषद *(बैंक परीक्षा, 2002)*

26. 'नेत्री' शब्द का पुंल्लिंग रूप है—
(a) नेता (b) नेतृ
(c) नेतिन (d) नेताइन *(बैंक परीक्षा, 2002)*

27. कारक के कितने भेद हैं?
(a) 7 (b) 8
(c) 9 (d) 10 *(बैंक परीक्षा, 2002)*

28. 'के लिए' किस कारक का चिह्न है?
(a) कर्म (b) सम्प्रदान
(c) संबंध (d) अपादान *(बैंक परीक्षा, 2002)*

29. 'वृक्ष से पत्ते गिरते हैं'—इस वाक्य में 'से' किस कारक का चिह्न है?
(a) कर्म (b) करण
(c) अपादान (d) अधिकरण

30. 'वृक्ष पर पक्षी बैठे हैं'—इस वाक्य में 'पर' कौन-सा कारक है ?
(a) कर्म (b) सम्प्रदान
(c) अपादान (d) अधिकरण *(बैंक परीक्षा, 2002)*

31. 'वह घर से बाहर गया'—इस वाक्य में 'से' कौन-सा कारक है ?
(a) कर्ता (b) कर्म
(c) करण (d) अपादान
(अध्यापक भर्ती परीक्षा, 2003)

32. 'चारपाई पर भाई साहब बैठे हैं'—इस वाक्य में 'चारपाई' शब्द किस कारक में है ?
(a) करण (b) सम्प्रदान
(c) संबंध (d) अधिकरण
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2003)

33. निम्नलिखित शब्दों में सदा स्त्रीलिंग वाला शब्द कौन-सा है ?
(a) पक्षी (b) बाज (c) मकड़ी (d) गैंडा
(रेलवे, 2003)

34. व्याकरण की दृष्टि से 'प्रेम' शब्द क्या है ?
(a) भाववाचक संज्ञा (b) विशेषण
(c) क्रिया (d) अव्यय *(बी० एड०, 2004)*

35. निम्नलिखित संज्ञा-विशेषण जोड़ी में कौन-सा सही नहीं है ?
(a) विष-विषैला (b) पिता-पैतृक
(c) आदि-आदिम (d) प्रांत-प्रांतिक *(रेलवे, 2005)*

36. कवि का स्त्रीलिंग है—
(a) कविइत्री (b) कवित्री
(c) कवयित्री (d) कवियित्री
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

37. हिन्दी भाषा में 'वचन' कितने प्रकार के हैं ?
(a) 3 (b) 2 (c) 4 (d) 5
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006, सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

38. लिंग की दृष्टि से ' दही' क्या है ?
(a) स्त्रीलिंग (b) पुंलिंग
(c) नपुंसक लिंग (d) उभयलिंग
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

39. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द स्त्रीलिंग है ?
(a) उत्साह (b) चक्रव्यूह
(c) मृत्यु (d) संकल्प
(प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2006)

40. बाल का स्त्रीलिंग है—
(a) बालिका (b) वालिका (c) बाला (d) वाली

41. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द को क्या कहते हैं ?
(a) सर्वनाम (b) विशेषण (c) क्रिया (d) अव्यय

42. निम्नलिखित वाक्यों में से किस वाक्य में सर्वनाम का अशुद्ध प्रयोग हुआ है ?
(a) वह स्वयं यहाँ नहीं आना चाहती।
(b) आपके आग्रह पर मैं दिल्ली जा सकता हूँ।
(c) मैं तेरे को एक घड़ी दूँगा।
(d) मुझे इस बैठक की सूचना नहीं थी। *(बी० एड०, 1998)*

43. 'मुझे' किस प्रकार का सर्वनाम है ?
(a) उत्तम पुरुष (b) मध्यम पुरुष
(c) अन्य पुरुष (d) इनमें से कोई नहीं
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2001)

44. सर्वनाम के कितने प्रकार हैं ?
(a) 4 (b) 5 (c) 6 (d) 7
(बैंक परीक्षा, 2002)

45. निश्चयवाचक सर्वनाम कौन-सा है ?
(a) क्या (b) कुछ (c) कौन (d) यह
(बी० एड०, 1998)

46. इनमें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कौन-सा है ?
(a) कौन (b) जो
(c) कोई (d) वह *(बैंक परीक्षा, 2002)*

47. 'यह घोड़ा अच्छा है'—इस वाक्य में 'यह' क्या है ?
(a) संज्ञा (b) सर्वनाम
(c) विशेषण (d) सार्वनामिक विशेषण
(रेलवे, 2000)

48. सम्बन्ध वाचक सर्वनाम बताएँ—
(a) कोई (b) कौन (c) जो (d) वह

49. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्दों को क्या कहते हैं ?
(a) विशेषण (b) विशेष्य (c) क्रिया (d) अव्यय

50. विशेषण के कितने प्रकार हैं ?
(a) 3 (b) 4 (c) 5 (d) 6

51. निम्नलिखित में से विशेषण चुनिए—
(a) भलाई (b) मिठास (c) थोड़ा (d) स्वयं
(रेलवे, 1997)

52. निम्नलिखित शब्दों में कौन-सा शब्द विशेषण है ?
(a) सच्चा (b) शीतलता
(c) नम्रता (d) मिठास *(बी० एड०, 1998)*

53. निम्नलिखित वाक्य में रंगीन शब्द विशेषण है, उसका भेद छाँटिए—
'कुछ बच्चे कक्षा में शोर मचा रहे थे।'
(a) गुणवाचक विशेषण
(b) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण
(c) सार्वनामिक विशेषण
(d) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण *(रेलवे, 1998)*

54. 'आलस्य' शब्द का विशेषण क्या है ?
(a) आलस (b) अलस
(c) आलसी (d) आलसीपन
(बी० एड०, 1999)

55. इनमें से गुणवाचक विशेषण कौन-सा है ?
(a) चौगुना (b) नया
(c) तीन (d) कुछ *(बी० एड०, 2000)*

56. निम्नलिखित में कौन-सा शब्द विशेषण है ?
(a) मात्र (b) खर्च
(c) निपट (d) चुपचाप *(बी० एड०, 2001)*

57. 'मानव' शब्द से विशेषण बनेगा—
(a) मनुष्य (b) मानवीकरण
(c) मानवता (d) मानवीय *(बैंक परीक्षा, 2002)*

58. 'उत्कर्ष' का विशेषण क्या होगा ?
(a) अपकर्ष (b) अवकर्ष
(c) उत्कृष्ट (d) उत्कीर्ण *(बैंक परीक्षा, 2002)*

59. 'आदर' शब्द से विशेषण बनेगा—
(a) आदरकारी (b) आदरपूर्वक
(c) आदरणीय (d) इनमें से कोई नहीं
(बैंक परीक्षा, 2002)

60. 'संस्कृति' का विशेषण है—
(a) संस्कृत (b) सांस्कृति
(c) संस्कृतिक (d) सांस्कृतिक *(रेलवे, 20002)*

61. 'पशु' शब्द का विशेषण क्या है ?
(a) पाशविक (b) पशुत्व
(c) पशुपति (d) पशुता *(रेलवे, 20003)*

62. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द विशेषण है ?
(a) सौंदर्य (b) बेकारी (c) वृक्ष (d) फुफेरा
(रेलवे, 20003)

63. 'प्रिय' विशेषण के साथ प्रयुक्त होनेवाली संज्ञा नहीं है—
(a) विषय (b) कवि (c) मित्र (d) बैरी
(बी० एड०, 2004)

64. किस वाक्य में 'अच्छा' शब्द का प्रयोग विशेषण के रूप में हुआ है ?
(a) तुमने अच्छा किया जो आ गए।
(b) यह स्थान बहुत अच्छा है।
(c) अच्छा, तुम घर जाओ।
(d) अच्छा है वह अभी आ जाए।

65. रचना की दृष्टि से क्रिया के कितने भेद हैं ?
(a) 2 (b) 3 (c) 4 (d) 5

66. क्रिया का मूल रूप कहलाता है—
(a) धातु (b) कारक
(c) क्रिया-विशेषण (d) इनमें से कोई नहीं

67. निम्नलिखित क्रियाओं में से कौन-सी क्रिया अनुकरणात्मक नहीं है ?
(a) फड़फड़ाना (b) मिमियाना
(c) झुठलाना (d) हिनहिनाना *(बी०एड०, 1998)*

68. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा ऐसा वाक्य है जिसकी क्रिया कर्ता के लिंग के अनुसार ठीक नहीं है ?
(a) राम आता है। (b) घोड़ा दौड़ता है।
(c) हाथी सोती है। (d) लड़की जाती है।
(बी० एड०, 1998)

69. काम का नाम बताने वाले शब्द को क्या कहते हैं ?
(a) संज्ञा (b) सर्वनाम
(c) क्रिया (d) क्रिया-विशेषण
(बी० एड०, 1999)

70. 'मैं खाना खा चुका हूँ'—इस वाक्य में भूतकालिक भेद इंगित कीजिए।
(a) सामान्य भूत (b) पूर्ण भूत
(c) आसन्न भूत (d) संदिग्ध भूत *(रेलवे, 20001)*

71. किस वाक्य में क्रिया वर्तमान काल में है ?
(a) उसने फल खा लिए थे।
(b) मैं तुम्हारा पत्र पढ़ रहा हूँ।
(c) अचानक बिजली कौंध उठी।
(d) कल वे आने वाले थे। *(बैंक परीक्षा, 2002)*

72. 'चिड़िया आकाश में उड़ रही है'—इस वाक्य में 'उड़ रही' क्रिया किस प्रकार की है ?
(a) अकर्मक (b) सकर्मक
(c) समापिका (d) असमापिका
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2002)

73. किस वाक्य में क्रिया सामान्य भूतकाल में है ?
(a) उसने पुस्तक पढ़ी (b) उसने पुस्तक पढ़ी है
(c) उसने पुस्तक पढ़ी थी (d) उसने पुस्तक पढ़ी होगी
(बैंक परीक्षा, 2002)

74. निम्नलिखित में से किस वाक्य में अकर्मक क्रिया है ?
(a) गेहूँ पिस रहा है (b) मैं बालक को जगवाता हूँ
(c) मदन गोपाल को हँसा रहा है (d) राम पत्र लिखता है
(रेलवे, 20003)

75. सामान्य वर्तमान काल का उदाहरण है—
(a) सीता बाजार जाती होगी (b) रमेश ने समाचार-पत्र पढ़ा
(c) वर्षा हो रही थी (d) वह कलकत्ता जाता है
(रेलवे, 20003)

76. निम्नलिखित में से किस वाक्य में अकर्मक क्रिया है ?
(a) श्याम भात खाता है (b) ज्योति रोती है
(c) मैंने उसे पुस्तक दी (d) उसकी कमीज है
(बी० एड०, 2004)

77. निम्नलिखित में विकारी शब्द कौन-से हैं ?
(a) संज्ञा-सर्वनाम-विशेषण-क्रिया
(b) तत्सम-तद्भव-देशज-विदेशज
(c) क्रिया विशेषण-संबंधबोधक-विस्मयादिबोधक
(d) इनमें से कोई नहीं

78. अविकारी शब्द होता है—
(a) संज्ञा (b) सर्वनाम
(c) विशेषण (d) अव्यय *(रेलवे, 20001)*

79. निम्नलिखित शब्दों में से कौन-सा शब्द क्रिया-विशेषण है ?
(a) सूर्योदय (b) नीला
(c) विगत (d) धीरे-धीरे *(रेलवे, 20001)*

80. अव्यय के कितने भेद हैं ?
(a) 3 (b) 4
(c) 5 (d) 6 *(बी० एड०, 2002)*

81. किस एक वाक्य में क्रिया-विशेषण प्रयुक्त हुआ है ?
(a) वह धीरे से बोलता है (b) वह काला कुत्ता है
(c) रमेश तेज धावक है (d) सत्य वाणी सुन्दर होती है
(रेलवे, 20002)

82. 'बृहत्' विशेषण का शुद्ध उत्तमावस्था है—
(a) बृहतर (b) बृहतम (c) बृहत्तम (d) बृहत्तर
(हरियाणा बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2007)

83. 'घनिष्ठ' की शुद्ध उत्तरावस्था है—
(a) घनिष्टतर (b) घनिष्टतम
(c) घनिष्ठतर (d) घनिष्ठतम
(हरियाणा बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2007)

84. संबंध कारक का चिह्न है—
(a) में, पर (b) के लिए
(c) –रा,–रे,–री (d) से
(उत्तर प्रदेश बी.एड.प्रवेश परीक्षा, 2008)

85. निम्नलिखित में विकारी शब्द कौन-सा है ?
(a) आज (b) यथा (c) परन्तु (d) लड़का
(बिहार पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

86. 'सभा में बीसियों लोग थे'—इसमें विशेषण का कौन-सा भेद है?
(a) समुदाय वाचक (b) परिमाण वाचक
(c) निश्चित संख्यावाचक (d) अनिश्चित संख्यावाचक
(राजस्थान बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

87. जो क्रिया अभी हो रही हो, उसे कहते हैं—
(a) सामान्य वर्तमान (b) अपूर्ण वर्तमान
(c) संदिग्ध वर्तमान (d) संदिग्ध भूत
(राजस्थान बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

88. कौन-सा शब्द क्रिया विशेषण है ?
(a) तेज (b) पहला (c) बुद्धिमान (d) मीठा
(राजस्थान बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2008)

89. देश को हानि <u>जयचन्दों</u> से होती है रेखांकित में संज्ञा है—
(a) जातिवाचक (b) व्यक्तिवाचक
(c) भाववाचक (d) द्रव्यवाचक
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

90. 'गरीबों को वस्त्र दो' वाक्य में कारक है—
(a) करण कारक (b) अपादान कारक
(c) सम्प्रदान कारक (d) कर्म कारक
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

91. तुम्हें <u>क्या</u> चाहिए रेखांकित का सर्वनाम भेद है—
(a) निजवाचक सर्वनाम (b) प्रश्नवाचक सर्वनाम
(c) संबंधवाचक सर्वनाम (d) निश्चयवाचक सर्वनाम
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

92. मीरा ने आधा लीटर दूध पी लिया रेखांकित में विशेषण है—
(a) गुणवाचक (b) संख्यावाचक
(c) परिमाणवाचक (d) सार्वनामिक
(उत्तराखण्ड पुलिस सब इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

93. "नल बूँद बूँद टपक रहा है" वाक्य में रेखांकित है—
(a) विशेषण (b) क्रिया
(c) क्रिया विशेषण (d) सर्वनाम
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

94. 'सुमित सो रहा है' वाक्य में क्रिया का भेद है—
(a) अकर्मक (b) सकर्मक (c) प्रेरणार्थक (d) द्विकर्मक
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

95. वाच्य कितने प्रकार के होते हैं?
(a) तीन (b) चार (c) पाँच (d) आठ
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

96. अव्यय के भेद होते हैं—
(a) पाँच (b) चार (c) तीन (d) दो
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

97. निम्न वाक्य किस अव्यय से पूरा होगा?
आज धन ... कोई नहीं पूछता
(a) के बिना (b) साथ (c) तक को (d) कहाँ
(उत्तराखण्ड पुलिस सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 2008)

98. निजवाचक सर्वनाम का प्रयोग किस वाक्य में हुआ है?
(a) यह मेरी निजी पुस्तक है (b) आज अपनापन कहाँ है
(c) अपनों से क्या छिपाना (d) आप भला तो जग भला
(झारखण्ड शिक्षक नियुक्ति परीक्षा, 2009)

99. शिव का विशेषण क्या है?
(a) शिवेश (b) शंकर
(c) शैव (d) शैल
(झारखण्ड शिक्षक नियुक्ति परीक्षा, 2009)

100. 'वह घर पहुँच गया'— इस वाक्य में 'पहुँच गया' निम्नांकित में से किस क्रिया का उदाहरण है?
(a) प्रेरणार्थक क्रिया (b) द्विकर्मक क्रिया
(c) संयुक्त क्रिया (d) पूर्वकालिक क्रिया
(झारखण्ड शिक्षक नियुक्ति परीक्षा, 2009)

101. इनमें से अपादान कारक की विभक्ति क्या है?
(a) ने (b) को (c) से (d) के लिए
(झारखण्ड शिक्षक नियुक्ति परीक्षा, 2009)

102. शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होने की योग्यता प्राप्त करता है, तो उसे कहा जाता है—
(a) वाक्य (b) ध्वनि (c) पद (d) समास
(नेट जे.आर.एफ., 2014)

उत्तरमाला

1. (a)	2. (a)	3. (c)	4. (a)	5. (b)	6. (c)	7. (b)	8. (c)	9. (a)	10. (c)	11. (c)	12. (b)
13. (b)	14. (a)	15. (c)	16. (c)	17. (a)	18. (a)	19. (d)	20. (b)	21. (c)	22. (c)	23. (a)	24. (a)
25. (d)	26. (a)	27. (b)	28. (b)	29. (c)	30. (d)	31. (d)	32. (d)	33. (a)	34. (a)	35. (d)	36. (c)
37. (b)	38. (b)	39. (c)	40. (c)	41. (a)	42. (c)	43. (a)	44. (c)	45. (d)	46. (c)	47. (b)	48. (c)
49. (a)	50. (b)	51. (c)	52. (a)	53. (d)	54. (c)	55. (b)	56. (c)	57. (d)	58. (c)	59. (c)	60. (d)
61. (a)	62. (d)	63. (d)	64. (b)	65. (a)	66. (a)	67. (c)	68. (c)	69. (c)	70. (b)	71. (b)	72. (a)
73. (a)	74. (a)	75. (d)	76. (b)	77. (a)	78. (d)	79. (d)	80. (b)	81. (a)	82. (c)	83. (c)	84. (c)
85. (d)	86. (d)	87. (b)	88. (a)	89. (a)	90. (d)	91. (b)	92. (c)	93. (c)	94. (a)	95. (a)	96. (b)
97. (a)	98. (d)	99. (c)	100. (c)	101. (c)	102. (c)						

★★★